11 विविधा

आधुनिक काल में हिन्दी कविता बड़ी तेजी के साथ परिवर्तनशील रही है। छायावाद के बाद तो यह परिवर्तन-क्रम और भी द्रुतगति से चला है। छायावादी कवि अपने चारों ओर कटु वास्तविकताओं के प्रति अपेक्षाशील रहे। फलस्वरूप कविवर दिनकर की शब्दावली में समकालीन सत्य से कविता का वियोग हो गया है। इस वियोगावस्था को समाप्त करने का सर्वप्रथम प्रयास व्यक्तिवादी कवियों हरिवंशराय बच्चन, नरेन्द्र शर्मा आदि ने सम्पन्न किया। उसके बाद मार्क्सवाद के प्रचार-प्रसार की छाया में उत्पन्न प्रगतिशील आन्दोलन ने हिन्दी कविता में प्रगतिवाद का प्रवर्तन किया। रामधारीसिंह 'दिनकर', शिवमंगलसिंह 'सुमन', केदारनाथ अग्रवाल, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' इस धारा के सशक्त कवि कहे जा सकते हैं। पुरानी पीढ़ी के कवियों में सुमित्रानन्दन पन्त, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' भी आन्दोलन से प्रभावित हुए थे।

हिन्दी के इस प्रगतिवादी काव्य में इस जगत् वे बाह्य यथार्थ का चित्रण अधिक था, लेकिन कविता तो भावना-कल्पना की भाषा है, इसलिए अन्तर्जगत् के यथार्थ के उद्‌घाटन की आतुरता को लेकर प्रयोगशील आन्दोलन खड़ा हुआ। इस प्रयोगवादी काव्य पर फ्रायड के मनोविश्लेषण सिद्धान्त का विशेष प्रभाव था। अज्ञेयजी की रचनाओं पर इस सिद्धान्त का प्रभाव अनेक स्थलों पर स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। प्रयोगशील कवियों के बाद आनेवाले कवियों ने यह अनुभव किया कि कविता के भीतर और बाहर के समग्र जीवन को अभिव्यक्ति मिलनी चाहिए और उन्होंने 'नयी कविता' का आन्दोलन खड़ा किया। डॉ० जगदीश गुप्त ने इस आन्दोलन का नेतृत्व किया। उसके बाद तो नाराज पीढ़ी की कविता, भूखी पीढ़ी की कविता, वीर कविता, अकविता आदि के अनेक आन्दोलन खड़े हुए। छायावाद के बाद जो ये अनेक काव्यान्दोलन खड़े हुए हैं, उन्हीं की कुछ झलक देने के लिए यह विविधा संकलित की गयी है। ●

नरेन्द्र शर्मा (जन्म–22 फरवरी, 1913 ई०, निधन–11 फरवरी, 1989 ई०) निवास–जहाँगीरपुर, जिला–बुलन्दशहर (उ०प्र०)

छायावादोत्तर काल में अपने प्रणय गीतों और सामाजिक भावना एवं क्रान्तिवाहक कविताओं से जनमत को बहुत गहराई से प्रभावित करनेवाले कवियों में नरेन्द्र शर्मा रहे हैं। जितनी तन्मयता से इन्होंने प्रेमी मानस के हर्ष-विषाद को वाणी दी, उतने ही आक्रोश और सच्चाई से इन्होंने विशाल जन-मानस की विवशता, विद्रोह-भावना और नव-निर्माण की चेतना को मुखरित किया। साहित्य और लोकमंच कवि-सम्मेलनों के माध्यम से नरेन्द्र शर्मा ने जन-जीवन को प्रभावित एवं प्रेरित कर साहित्यकार के दायित्व का निर्वाह किया है। अधिकांशतः गीतों के माध्यम से इन्होंने अपने भावों और विचारों को वाणी दी है। ●

'शूल-फूल', 'कर्णफूल', 'प्रवासी के गीत', 'पलाश वन', 'मिट्टी और फूल', 'हंसमाला', 'रक्त चन्दन' आदि इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं।

भवानीप्रसाद मिश्र (जन्म सन् 1914 ई०, मृत्यु सन् 1985 ई०)

भवानीप्रसाद मिश्र प्रयोगशील एवं नयी कविता के बड़े सशक्त कवि रहे हैं। वैयक्तिकता के आधार पर मिश्र जी ने अपने आस-पास की हलचलों को सामाजिक उत्तरदायित्व की दृष्टि से बड़े प्रभावपूर्ण रूप में तथा नितान्त सहज और बोलचाल की भाषा-शैली में

व्यक्त कर कविता को आत्मीय वार्त्तालाप एवं आत्मानुभव कथन के रूप में प्रतिष्ठित किया है। जीवन में जो कुछ स्वस्थ है, मंगलदायक है, आह्लादकारी है, उसे उभारने एवं प्रचारित-प्रसारित करने के लिए ही इन्होंने काव्य को साधन बनाया है। **'गीत फरोश'** नामक प्रसिद्ध रचना में इन्होंने कवि सम्मेलनों एवं सर्वज्ञ बनने का दावा करनेवाले रचनाकारों पर परोक्षतः प्रहार किया है। आधुनिक जीवन की यान्त्रिकता और ऊब को प्राकृतिक एवं मानवीय सौन्दर्य एवं गरिमा से मुक्ति प्राप्त कर सम्पन्न किया जा सकता है, यह विश्वास इनकी रचनाओं में मुखर हुआ है। 'अनाम तुम आते हो', 'त्रिकाल संध्या', 'परिवर्तन जिए', 'मानसरोवर दिन', 'कालजयी', 'गीत फरोश' आदि इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। ●

गजानन माधव मुक्तिबोध (जन्म सन् 1917 ई०, मृत्यु सन् 1964 ई०)

पद, प्रतिष्ठा और उन्नति की चक्करदार सीढ़ियों पर चढ़ते जानेवाले बुद्धिजीवियों की मानसिक दासता के युग में गजानन माधव मुक्तिबोध एक ललकार के रूप में हिन्दी काव्य-जगत् में अवतरित हुए। चालाक बुद्धिजीवियों की स्वार्थपरता पर गहरी चोट करनेवाले मुक्तिबोध प्रायः अस्पष्ट हो गये हैं। सुविधाप्रिय जीवन पद्धति पर तीखा प्रहार करते हुए मुक्तिबोध ने अपनी सामाजिक भावना को प्रकट किया है। छायावादी लिजलिजेपन और प्रगतिवादी थोथे नारों और हुल्लड़बाजी के प्रति असहमति प्रकट करते हुए मुक्तिबोध ने शोषण का बड़ा सशक्त विरोध अपनी रचनाओं के माध्यम से किया है। 'चाँद का मुँह टेढ़ा है', भूरी-भूरी खाक धूल' आदि इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। ●

गिरिजाकुमार माथुर (जन्म सन् 1919 ई०, मृत्यु सन् 1994 ई०)

रोमाण्टिक अनुभूति, सम्पन्न प्रणय और सौन्दर्य के प्रति नवीन दृष्टि से युक्त और व्यक्ति मन तथा सामूहिक मन की अनेक अपूर्व अनुभूतियों को वाणी देनेवाले गिरिजाकुमार माथुर का प्रयोगशील कवियों में विशिष्ट स्थान है। छायावादी अलौकिकता एवं प्रगतिवादी सांसारिकता की अति से ऊबकर इन्होंने अनेक वैयक्तिक, पारिवारिक एवं सामाजिक अनुभूतियों को अत्यन्त सहज एवं बोलचाल की भाषा में व्यक्त कर नवीनता और ताजगी का वातावरण बनाया है। आधुनिक जीवन की जटिलताओं एवं कुण्ठाओं को व्यक्त करती हुई परिस्थितियों में परिवर्तित मानस के भावों एवं विचारों की कहीं-कहीं बड़ी सशक्त अभिव्यक्ति इनमें मिलती है। 'मंजीर', 'नाश और निर्माण', 'धूप के धान', शिलापंख चमकीले', 'जो बँध न सका' आदि इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। ●

धर्मवीर भारती (जन्म सन् 1926 ई०, मृत्यु सन् 1997 ई०)

पद्मश्री धर्मवीर भारती प्रयोगवादी मनोवृत्ति के कारण आधुनिक हिन्दी काव्य में अपनी आधुनिक दृष्टि, रोमाण्टिक प्रवृत्ति, व्यक्तिवादी चेतना तथा सहज जीवन्त एवं बोलचाल की भाषा के लिए प्रख्यात हैं। प्रेम के शारीरिक एवं मानसिक दोनों पक्षों को नये-पुराने छन्दों में व्यक्त करने वाले महाभारत की कुछ घटनाओं और पात्रों को आधुनिक एवं वैयक्तिकता के आधार पर देखकर 'अन्धायुग' तथा 'कनुप्रिया' एवं वैयक्तिक चेतना के समन्वयकर्त्ता के रूप में, अपनी नवीनतम रचनाओं में व्यक्त हुए हैं। इनके जीवन्त और मर्मस्पर्शी गद्य में भी इनके कवित्व का स्पर्श मिलता है। व्यक्ति-मन और सामूहिक चेतना दोनों ही इनमें व्यक्त हुई हैं। धर्मवीर भारती की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं–

काव्य-संग्रह : 'अंधायुग', 'कनुप्रिया', 'सात-गीत-वर्ष', 'देशान्तर', 'ठण्डा-लोहा' आदि।

उपन्यास : 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' तथा 'गुनाहों का देवता' आदि।

नरेन्द्र शर्मा

मधु की एक बूँद

[सृष्टि का हर चेतन मधु की एक बूँद के लिए अर्थात् आनन्द के एक क्षण की संप्राप्ति के लिए जीवन भर प्रयत्नशील रहता है। कला, संस्कृति, दर्शन एवं साहित्य सभी के प्राणतत्त्व के रूप में मधु की एक बूँद को प्रतिष्ठित किया गया है। हमारे सभी क्रिया-कलाप वस्तुतः इसी आनन्द के क्षण की खोज के लिए हैं। नरेन्द्र शर्मा यही विचार अपनी इस रचना के माध्यम से प्रकट करना चाहते हैं।]

मधु की एक बूँद के पीछे
मानव ने क्या क्या दुख देखे!
मधु की एक बूँद धूमिल घन
दर्शन और बुद्धि के लेखे!

सृष्टि अविद्या का कोल्हू यदि,
विज्ञानी विद्या के अंधे;
मधु की एक बूँद बिन कैसे
जीव करे जीने के धंधे!

मधु की एक बूँद से भी यदि
जुड़ न सके मन का अपनापा,
क्यों दें श्रमिक पसीना, सैनिक
लहू, करे क्यों जाया जापा!

मधु की एक बूँद से बच कर,
व्यक्ति मात्र की बची चदरिया;
न घर तेरा, ना घर, मेरा,
रैन-बसैरा बनी नगरिया!

मधु की एक बूँद बिन, रीते
पाँचों कोश और पाँचों जन;
मधु की एक बूँद बिन, हम से
सभी योजनायें सौ योजन!

मधु की एक बूँद बिन, ईश्वर
शक्तिमान भी शक्तिहीन है!
मधु की एक बूँद सागर है,
हर जीवात्मा मधुर मीन है।

मधु की एक बूँद पृथ्वी में,
मधु की एक बूँद शशि-रवि में
मधु की एक बूँद कविता में,
मधु की एक बूँद है कवि में!
मधु की एक बूँद के पीछे
मैंने अब तक कष्ट सहे शत;
मधु की एक बूँद मिथ्या है-
कोई ऐसी बात कहे मत!

('बहुत रात गए' से)

भवानीप्रसाद मिश्र

बूँद टपकी एक नभ से

[एक बहुत ही सामान्य-सी प्राकृतिक घटना, आकाश से बूँद का टपकना, आधुनिक बोध से सम्पन्न संवेदनशील कवि को प्रेमिका द्वारा प्रणय-विभोर-स्वरूप पथिक को झरोखे से एक झाँक दिखाकर छिप जानेवाली उसकी छवि जैसा लगता है। परम्परागत प्रतिक्रिया से भिन्न कवि के मानस में अनेक नये चित्र उभरे हैं, वे सभी पाठक को सहज रूप में मुग्ध कर लेते हैं। मिश्रजी की यह रचना सिद्ध करती है कि सामान्य शब्दावली में भी विशिष्ट अनुभवों को सम्प्रेषित किया जा सकता है।]

बूँद टपकी एक नभ से,
किसी ने झुक कर झरोखे से
कि जैसे हँस दिया हो,
हँस रही-सी आँख ने जैसे
किसी को कस दिया हो;
ठगा-सा कोई किसी की आँख
देखे रह गया हो,
उस बहुत से रूप को, रोमांच रोके
सह गया हो।
बूँद टपकी एक नभ से,
और जैसे पथिक
छू मुस्कान, चौंके और घूमे
आँख उसकी, जिस तरह
हँसती हुई-सी आँख चूमे,
उस तरह मैंने उठाई आँख;
बादल फट गया था,
चन्द्र पर आता हुआ-सा अभ्र
थोड़ा हट गया था।
बूँद टपकी एक नभ से,
ये कि जैसे आँख मिलते ही
झरोखा बन्द हो ले,
और नूपुर ध्वनि, झमक कर,
जिस तरह द्रुत छन्द हो ले,
उस तरह बादल सिमट कर,
चन्द्र पर छाये अचानक,
और पानी के हजारों बूँद
तब आये अचानक।

('दूसरा सप्तक' से)

गजानन माधव मुक्तिबोध

मुझे कदम-कदम पर

[कवि को बहिर्जगत् में इतने मनोरम, इतने प्रभावपूर्ण और इतने सुन्दर दृश्य अपने चारों ओर देखने को मिलते हैं कि वह उन्हें निरन्तर देखते रहना चाहता है। उसमें अनवरत प्रेरणा ग्रहण करते रहना चाहता है। यह संसार ही कुछ ऐसी मान्यता वाला है। कवि इससे ही रचना की प्रेरणा ग्रहण करता है और कभी-कभी इतनी अधिक मात्रा में कि उसके लिए चयन करना कठिन हो जाता है। दुराग्रह एवं पूर्वाग्रह रहित रचना-दृष्टि यदि रचयिता के पास रहे तो उसकी रचना में सदा नवीनता बनी रह सकती है। मुक्तिबोध यही भाव अपनी इस रचना के द्वारा हमारे मन में जगाना चाहते हैं।]

मुझे कदम-कदम पर
चौराहे मिलते हैं
बाहें फैलाये!!
एक पैर रखता हूँ
कि सौ राहें फूटतीं,
मैं उन सब पर से गुजरना चाहता हूँ।
बहुत अच्छे लगते हैं
उनके तजुर्बे और अपने सपने
सब सच्चे लगते हैं;
अजीब सी अकुलाहट दिल में उभरती है,
मैं कुछ गहरे में उतरना चाहता हूँ,
जाने क्या मिल जाये!!
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में
चमकता हीरा है,
हर-एक छाती में आत्मा अधीरा है,
प्रत्येक सुस्मित में विमल सदानीरा है,
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में
महाकाव्य-पीड़ा है,
पल भर में सब में से गुजरना चाहता हूँ,
प्रत्येक उर में से तिर आना चाहता हूँ,
इस तरह खुद ही को दिये-दिये फिरता हूँ,
अजीब है जिन्दगी!!

कहानियाँ लेकर और
मुझको कुछ दे कर ये चौराहे फैलते
जहाँ जरा खड़े हो कर
बातें कुछ करता हूँ.....
.....उपन्यास मिल जाते।

दुःख की कथाएँ, तरह-तरह की शिकायतें,
अहंकार विश्लेषण, चारित्रिक आख्यान,

जमाने के जानदार सूरे व आयतें
सुनने को मिलती हैं।

कविताएँ मुसकरा लाग-डाँट करती हैं,
प्यार बात करती हैं।
मरने और जीने की जलती हुई सीढ़ियाँ
श्रद्धाएँ चढ़ती हैं!!

घबराये प्रतीक और मुसकाते रूप-चित्र
लेकर मैं घर पर जब लौटता...
उपमाएँ, द्वार पर आते ही कहती हैं कि
सौ बरस और तुम्हें
जीना ही चाहिए।

घर पर भी, पग-पग पर चौराहे मिलते हैं,
बाहें फैलाये रोज मिलती हैं सौ राहें,
शाखा-प्रशाखाएँ निकलती रहती हैं,
नव-जीवन रूप-दृश्य वाले सौ-सौ विषय
रोज-रोज मिलते हैं...
और, मैं सोच रहा कि
जीवन में आज के
लेखक की कठिनाई यह नहीं कि
कमी है विषयों की
वरन् यह कि आधिक्य उनका ही
उसको सताता है,
और, वह ठीक चुनाव कर नहीं पाता है!!

('चाँद का मुँह टेढ़ा है' से)

●

गिरिजाकुमार माथुर

चित्रमय धरती

[कवि ने अपनी इस रचना में विराट् धरती के अब तक देखे-अनदेखे सभी प्रकार के सौन्दर्य का चित्रण किया है। रचना का अनूठापन यह है कि कवि की दृष्टि अमर, साँवर, मटियाली, काली धरती के शोभामय स्वरूपों की ओर गयी है। धरती की ठण्डक, उसकी गन्ध ने भी उसको अभिभूत किया है। नये कवि के रूप में श्री माथुर ने असुन्दर में भी सौन्दर्य के दर्शन किये हैं। तभी तो इन्हें वह विराट् प्रकृति अपने सभी रूपों में सुषमामण्डित प्रतीत हुई है।]

ये धूसर साँवर मटयाली, काली धरती
फैली है कोसों आसमान के घेरे में
रुखों छाये नालों के हैं तिरछे ढलान
फिर हरे-भरे लम्बे चढ़ाव
झरबेरी, ढाक, कास से पूरित टीलों तक

जिनके पीछे छिप जाती है
गढ़बाटों की रेखा गहरी
ये सोंधी घास ढँकी रूँदे
हैं धूप बुझी हारें भूरी
सूनी-सूनी उन चरगाहों के पार कहीं
धुँधली छाया बन चली गयी है
पाँत दूर के पेड़ों की
उन ताल वृक्ष के झौरों के आगे दिखती
नीली पहाड़ियों की झाँई
जो लटें पसारे हुए जंगलों से मिलकर
है एक हुई

यह चित्रमयी धरती फैली है कोसों तक
जिसके वन-पेड़ों के ऊपर
नीमों, आमों, वट, पीपल पर
निखरे-निखरे मौसम आते
कच्ची मिट्टी के गाँवों पर
भर जाते हैं खेरे और खेत
फिर रंग-बिरंगी फसलों से
जिनमें सूरज की धूप दूध बन रम जाती
हर दाने में रच जाता अमरित चन्दा का

इस धूसर साँवर धरती की सोंधी उसाँस
कच्ची मिट्टी का ठण्डापन
मटयाला-सा हलका साया
तन मन में साँसों में छाया
जिसकी सुधि आते ही पड़ती
ऐसी ठण्डक इन प्रानों में
ज्यों सुबह ओस गीले खेतों से आती है
मीठी हरियाली-खुशबू मन्द हवाओं में।

('लैण्डस्केप : धूप के धान' से)

●

धर्मवीर भारती

साँझ के बादल

ये अनजान नदी की नावें
जादू के-से पाल
उड़ातीं
आतीं
मन्थर चाल!
नीलम पर किरनों

की साँझी
एक न डोरी
एक न माँझी
फिर भी लाद निरन्तर लातीं
सेन्दुर और प्रवाल!
कुछ समीप की
कुछ सुदूर की
कुछ चन्दन की
कुछ कपूर की
कुछ में गेरू, कुछ में रेशम
कुछ में केवल जाल!
ये अनजान नदी की नावें
जादू के-से पाल
उड़ातीं
आतीं
मन्थर चाल...

('सात गीत वर्ष' से)

●

अभ्यास प्रश्न

पद्यांश पर आधारित प्रश्न

1. पद्यांशों पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(मधु की एक बूँद)

(क) मधु की एक बूँद के पीछे
मानव ने क्या क्या दुख देखे!
मधु की एक बूँद धूमिल घन
दर्शन और बुद्धि के लेखे!

सृष्टि अविद्या का कोल्हू यदि,
विज्ञानी विद्या के अंधे;
मधु की एक बूँद बिन कैसे
जीव करे जीने के धंधे!

मधु की एक बूँद से भी यदि
जुड़ न सके मन का अपनापा,
क्यों दें श्रमिक पसीना, सैनिक
लहू, करे क्यों जाया जापा!

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश के कवि एवं रचना का नाम लिखिए।
(ii) प्रस्तुत पद्यांश के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?
(iii) कवि के अनुसार किसकी अभिव्यक्ति असंभव है?
(iv) प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने किस प्रसंग का उल्लेख किया है?
(v) रेखांकित पंक्ति की व्याख्या कीजिए।

(ख) मधु की एक बूँद बिन, ईश्वर
शक्तिमान भी शक्तिहीन है।
मधु की एक बूँद सागर है,
हर जीवात्मा मधुर मीन है।
मधु की एक बूँद पृथ्वी में,
मधु की एक बूँद शशि-रवि में!
मधु की एक बूँद कविता में,
मधु की एक बूँद है कवि में!

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश के कवि एवं कविता का नाम लिखिए।
(ii) उपर्युक्त कविता का आशय क्या है?
(iii) जीवात्मा मधुर मीन क्यों कहा गया है?
(iv) मधु की एक बूँद के बिना ईश्वर भी शक्तिहीन कैसे है?
(v) मधु की एक बूँद पृथ्वी, शशि एवं रवि में किस रूप में विद्यमान है?

(मुझे कदम-कदम पर)

(ग) मुझे कदम-कदम पर
चौराहे मिलते हैं
बाहें फैलाये!!
एक पैर रखता हूँ
कि सौ राहें फूटतीं,
मैं उन सब पर से गुजरना चाहता हूँ।
बहुत अच्छे लगते हैं
उनके तजुर्बे और अपने सपने
सब सच्चे लगते हैं;
अजीब सी अकुलाहट दिल में उभरती है,
मैं कुछ गहरे में उतरना चाहता हूँ,
जाने क्या मिल जाये!!
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में
चमकता हीरा है,
हर-एक छाती में आत्मा अधीरा है,
प्रत्येक सुस्मित में विमल सदानीरा है,
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में
महाकाव्य-पीड़ा है,
पल भर में सब में से गुजरना चाहता हूँ,

प्रत्येक उर में से तिर आना चाहता हूँ,
इस तरह खुद ही को दिये-दिये फिरता हूँ,
अजीब है जिन्दगी!!

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) प्रस्तुत पद्यांश के माध्यम से कवि ने क्या संदेश दिया है?
(iii) कवि सदैव प्रयत्नशील अवस्था में विद्यमान क्यों रहता है?
(iv) प्रस्तुत पद्यांश किस छन्द में है?
(v) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(घ) घर पर भी, पग-पग पर चौराहे मिलते हैं,
बाहें फैलाये रोज मिलती हैं सौ राहें,
शाखा-प्रशाखाएँ निकलती रहती हैं,
नव जीवन रूप-दृश्य वाले सौ-सौ विषय
रोज-रोज मिलते हैं.....
और, मैं सोच रहा कि
जीवन में आज के
लेखक की कठिनाई यह नहीं कि
कमी है विषयों की
वरन् यह कि आधिक्य उनका ही
उसको सताता है,
और, वह ठीक चुनाव कर नहीं पाता है।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश के कवि और कविता का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) 'चौराहा' शब्द में कौन-सा समास है?
(iv) संसार तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्या-क्या परिलक्षित होते हैं?
(v) कवि को कहाँ पर चौराहे और उन पर अपनी बाँहें फैलाये हुए सैकड़ों राहें मिल जाती हैं?

(ङ) हर-एक छाती में आत्मा अधीरा है,
प्रत्येक सुस्मित में विमल सदानीरा है,
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में
महाकाव्य-पीड़ा है।

प्रश्न– (i) पाठ का शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।
(ii) संसार में प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा में क्या है?
(iii) प्रत्येक व्यक्ति की मुस्कान किसके समान है?
(iv) प्रत्येक व्यक्ति की वाणी में क्या समाई हुई है?
(v) मैं क्या दे-देकर उस पीड़ा का स्रोत खोज रहा हूँ? **[2020 DG]**

(बूँद टपकी एक नभ से)

(च) बूँद टपकी एक नभ से,
किसी ने झुक कर झरोखे से

कि जैसे हँस दिया हो,
हँस रही-सी आँख ने जैसे
किसी को कस दिया हो
ठगा-सा कोई किसी की आँख
देखे रह गया हो
उस बहुत से रूप को, रोमांच रोके
सह गया हो
बूँद टपकी एक नभ से;
और जैसे पथिक
छू मुस्कान, चौंके और घूमे
आँख उसकी, जिस तरह
हँसती हुई-सी आँख चूमे
उस तरह मैंने उठायी आँख
बादल फट गया था
चन्द्र पर आता हुआ-सा अभ्र
थोड़ा हट गया था।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश के कवि और कविता का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने जब नायिका की ओर देखा तब क्या हुआ था?
(iv) प्रस्तुत पद्यांश में कौन-सा अलंकार है?
(v) कवि ने किसे देखकर ऐसी कल्पना की है कि मानो किसी सुन्दरी की मुस्कान को देखकर कोई चौंक पड़ा हो?

(चित्रमय धरती)

(छ) यह चित्रमयी धरती फैली है कोसों तक
जिसके वन-पेड़ों के ऊपर
नीमों, आमों, वट, पीपल पर
निखरे-निखरे मौसम आते
कच्ची मिट्टी के गाँवों पर
भर जाते हैं खेरे और खेत
फिर रंग-बिरंगी फसलों से
जिनमें सूरज की धूप दूध बन रम जाती
हर दाने में रच जाता अमरित चन्दा का

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा उपर्युक्त पद्यांश के कवि एवं कविता का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) पृथ्वी पर उगे हुए नीम, आम, बरगद और पीपल के पेड़ों पर किस प्रकार की ऋतुएँ आती हैं?
(iv) प्रस्तुत पद्य-पंक्तियों में कौन-कौन से अलंकार हैं?
(v) अनाज के प्रत्येक दाने में अमृत कौन भर देता है?

(साँझ के बादल)

(ज) ये अनजान नदी की नावें
जादू के-से पल
उड़ातीं आतीं
मन्थर चाल।
नीलम पर किरनों
की साँझी
एक न डोरी
एक न माँझी
फिर भी लाद निरन्तर लातीं
सेन्दुर और प्रवाल।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश के कवि और कविता का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) कवि ने सान्ध्यकालीन बादलों के सौन्दर्य का वर्णन किस रूप में किया है?
(iv) बादल रूपी नावों में क्या लदा हुआ है?
(v) कवि ने बादल रूपी नावों के किन-किन रूपों का वर्णन किया है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नांकित काव्य-सूक्तियों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए—
(क) मधु की एक बूँद के पीछे मानव ने क्या-क्या दुख देखे।
(ख) सृष्टि अविद्या का कोल्हू यदि,
विज्ञानी विद्या के अन्धे।
(ग) मुझे कदम-कदम पर चौराहे मिलते हैं।
(घ) न घर तेरा ना घर मेरा, रैन-बसेरा बनी नगरिया।
2. नयी कविता की प्रवृत्तियों का उल्लेख करते हुए उपयुक्त उदाहरणों से उसकी पुष्टि कीजिए।
3. भवानीप्रसाद मिश्र की काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
4. नयी कविता के अधुनातन हस्ताक्षरों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
5. नरेन्द्र शर्मा का परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
6. भवानीप्रसाद मिश्र का जीवन और काव्य-परिचय दीजिए।
7. गिरिजाकुमार माथुर का परिचय देते हुए इनकी काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
8. धर्मवीर भारती की काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
9. 'मुझे कदम-कदम पर' कविता में चौराहे किस चीज के प्रतीक हैं? इस कविता का सारांश लिखिए।
10. धर्मवीर भारती का जीवन-परिचय लिखिए।
11. मुक्तिबोध की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए।
12. मुक्तिबोध का जीवन-परिचय लिखिए।
13. नरेन्द्र शर्मा का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **[2020 ZG]**

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भवानीप्रसाद मिश्र विरचित 'बूँद टपकी एक नभ से' कविता का केन्द्रीय भाव अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
2. गिरिजाकुमार माथुर धरती को चित्रमय क्यों कहते हैं? उनकी प्रस्तुत कविता का मुख्य अभिप्रेत क्या है?
3. धर्मवीर भारती के 'साँझ के बादल' कविता की कथन-भंगिमा की विशेषता उद्घाटित कीजिए।
4. नयी कविता को अकविता नाम देने के पीछे आलोचकों का क्या मन्तव्य रहा है?
5. धर्मवीर भारती की रचनाओं का नामोल्लेख कीजिए।
6. नरेन्द्र शर्मा की 'मधु की बूँद' कविता का क्या सन्देश है? स्पष्ट उत्तर दीजिए।
7. "भवानीप्रसाद मिश्र प्रगतिशील एवं नयी कविता के एक सशक्त कवि हैं।" इस कथन की विवेचना कीजिए।

काव्य-सौन्दर्यात्मक प्रश्न

1. निम्नांकित काव्य-पंक्तियों में काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—
   (क) मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में चमकता हीरा है।
   (ख) शक्तिमान भी शक्तिहीन है।
2. उपमा, उत्प्रेक्षा एवं रूपक अलंकार का लक्षण बताते हुए 'साँझ के बादल' शीर्षक कविता से एक-एक उदाहरण लिखिए।